an>

Title: Regarding problem faced by the people in bringing the dead bodies of their relatives from abroad.

श्री रवनीत सिंह (लुधियाना) : उपाध्यक्ष महोदय, एक बहुत ही अहम मुद्दे पर आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, मैं इसके लिए आपका आभारी हूं। आप जानते हैं कि हमारे देश से हजारों लोग, चाहे मिडल ईस्ट की बात करें, चाहे यूरोप की बात करें, चाहे अमेरिका या कनाडा की बात करें, वहां मेहनत, मजदूरी के लिए और नौजवान पढ़ने के लिए जाते हैं। उसमें खासतौर से पंजाब के लोगों की बहुत ज्यादा तादाद होती है। लोग काम करने गए हों और परिवारों के बगैर गए हों, तो वहां पर किसी भी कारणवश चाहे उनकी डेथ किसी एक्सीडेंट में हो, चाहे किसी बीमारी के कारण हो या साधारण डेथ हो, जब उनकी डेथ हो जाती है, उसके बाद डेड बॉडी को अपने घर लाने के लिए बहुत दिक्कत का सामना उनकी फेमिली को करना पड़ता है। मिडल ईस्ट में खास तौर से चार-चार महीने डेड बॉडी को लाने में लग जाते हैं। ऐसे भी केस हैं जिसमें दो-दो साल लग गए। आप समझ सकते हैं, जिस परिवार में डेथ हुई हो, कितना बड़ा मातम उस परिवार में होगा और लगातार चार महीने उनको अपने परिवार के मेंबर की बॉडी लेने में लग जाए, तो इतना लम्बा टाइम किस तरीके से वह परिवार सहन कर पाता है।

मेरी आपके माध्यम से सरकार से मांग है, एंबैसीज में खासतौर से कोई फंड रखा जाए, जिससे वे उनकी बॉडीज यहां वापस ला सकें। खासतौर से यहां पर भी एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्ट्री में ऐसा ऑफिसर डेप्यूट किया जाए या कोई सेल बनाया जाए जो उनको परिवारों को यह बात बता सके कि कितने समय में उनकी बॉडी यहां पहुंचेगी। उन्हें माली मदद भी दी जाए और ऐसी व्यवस्था की जाए कि उनको वहां चक्कर न लगाना पड़े।